C.B.S.E

कक्षा : 10

विषय: हिंदी A

समय : 3 घंटे **पूर्णांक : 80**

सामान्य निर्देश:

1. इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं- क, ख, ग, और घ।

2. चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।

3. यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रम से लिखिए।

4. एक अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 15-20 शब्दों में लिखिए।

5. दो अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 30-40 शब्दों में लिखिए।

6. तीन अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 60-70 शब्दों में लिखिए।

खंड - क

[अपठित अंश]

प्र. 1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए। (2×4=8) (1×2=2) [10]

हमारे देश को आज़ादी दिलाने के लिये कई स्त्रियों ने कड़ा संघर्ष किया उनमें सरोजनी नायडू का अपना अलग ही स्थान है। उनकी आवाज बेहद मधुर थी, इसी वजह से वह पूरे विश्व में भारत कोकिला के नाम से विख्यात थी। बचपन में वह बेहद मेधावी छात्रा थी। 1905 में गोल्डेन थ्रेशोल्ड शीर्षक से उनकी कविताओं का पहला संग्रह प्रकाशित हुआ था। इसके बाद उनके दूसरे और तीसरे कविता संग्रह 'बर्ड आफ टाइम' तथा 'ब्रोकन विंग्स' ने उन्हे सुप्रसिद्ध कवियत्री बना दिया। 1914 में इंग्लैंड मे वे पहली बार गाँधी जी से मिली और उनके विचारों से प्रभावित होकर देश के लिये समर्पित हो गई।

एक कुशल सेनापति की भाँति उन्होंने अपनी प्रतिभा का परिचय आंदोलन, समाज सुधार और कांग्रेस पार्टी के संगठन में दिया। उन्होंने अनेक राष्ट्रीय आंदोलन का नेतृत्व किया और कई बार जेल भी गई। पहली महिला राजपाल होने का गौरव प्राप्त हुआ। उन्होंने अपना सारा जीवन देश को समर्पित कर दिया था।

1. अपनी मधुर आवाज़ के कारण सरोजनी नायडू कौन से नाम से विख्यात थीं?

   उत्तर : अपनी मधुर आवाज़ के कारण सरोजनी नायडू 'भारत कोकिला' के नाम से विख्यात थीं।

2. सरोजनी नायडू ने कौन-कौन से कविता संग्रह ने उन्हें सुप्रसिद्ध कवियत्री बना दिया?

   उत्तर : 1905 में गोल्डेन थ्रेशोल्ड शीर्षक से उनकी कविताओं का पहला संग्रह प्रकाशित हुआ था। इसके बाद उनके दूसरे और तीसरे कविता संग्रह 'बर्ड आफ टाइम' तथा 'ब्रोकन विंग्स' ने उन्हे सुप्रसिद्ध कवियत्री बना दिया।

3. सरोजनी नायडू को कौन सा गौरव प्राप्त हुआ?

   उत्तर : सरोजनी नायडू को पहली महिला राजपाल होने का गौरव प्राप्त हुआ।

4. सरोजनी नायडू ने अपनी प्रतिभा का परिचय कब दिया?

   उत्तर : सरोजनी नायडू ने अपनी प्रतिभा का परिचय आंदोलन, समाजसुधार और कांग्रेस पार्टी के संगठन में दिया।

5. सरोजनी नायडू किनके विचारों से प्रभावित हुई और उसका क्या परिणाम हुआ?

उत्तर : 1914 में इंग्लैंड मे वे पहली बार गाँधी जी से मिली और उनके विचारों से प्रभावित होकर देश के लिये समर्पित हो गई।

6. उपर्युक्त गद्यांश के लिए उचित शीर्षक दीजिए।

उत्तर : उपर्युक्त गद्यांश के लिए 'भारत कोकिला' सरोजनी नायडू उचित शीर्षक है।

खंड - ख

[व्यावहारिक व्याकरण]

प्र. 2. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए। (1x4=4)

(क) मोटरगाड़ी खराब होने से उसे पैदल आना पड़ा।(संयुक्त वाक्य)

उत्तर : मोटरगाड़ी खराब हो गई इसलिए उसे पैदल आना पड़ा।

(ख) राम ने बूढ़ी महिला को कपड़े दिए। (मिश्र वाक्य)

उत्तर : राम ने उस महिला को कपड़े दिए जो बूढ़ी थी।

(ग) रीता ने कहा कि वह खाना नहीं खाएगी। (रचना की दृष्टि से वाक्य का भेद बताइए)

उत्तर : मिश्र वाक्य

(घ) जैसे ही गोली चली, पक्षी उड़ गए। (सरल वाक्य)

उत्तर : गोली चलते ही पक्षी उड़ गए।

प्र.3. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित पदों का परिचय दीजिए। (1x4=4)

(क) हम अजमेर घूमने गए।

उत्तर : हम - सर्वनाम पुरुषवाचक सर्वनाम, पुल्लिंग, एवं स्त्रीलिंग दोनों में संभव, बहुवचन कर्ता।

(ख) दिल्ली भारत की राजधानी है।

उत्तर : भारत - संज्ञा, व्यक्तिवाचक, पुल्लिंग, एकवचन।

(ग) निर्धन मजदूर परिश्रम कर रहा है।

उत्तर : निर्धन - विशेषण, गुणवाचक, पुल्लिंग, एकवचन, 'मजदूर' विशेष्य।

(घ) अरे! कितना प्यारा बच्चा है।

उत्तर : अरे! - विस्मयादि बोधक अव्यय, आश्चर्य का भाव व्यक्त करनेवाला।

प्र. 4. निर्देशानुसार वाच्य परिवर्तन कीजिए। (1x4=4)

(क) सरकार बाढ़ पीड़ितों की सहायता करती है। (कर्मवाच्य)

उत्तर : सरकार द्वारा बाढ़ पीड़ितों की सहायता की जाती है।

(ख) अस्वस्थ होने के कारण वह नहीं दौड़ी। (भाववाच्य)

उत्तर : अस्वस्थ होने के कारण उससे नहीं दौड़ा गया।

(ग) राधा ने चित्र बनाया। (कर्मवाच्य)

उत्तर : राधा द्वारा चित्र बनाया गया।

(घ) सुमन तैरती है। (भाववाच्य)

उत्तर : सुमन से तैरा जाता है।

प्र.5. निम्नलिखित काव्यांशों में प्रयुक्त रस पहचानिए। (1x4=4)

(क) चरनकमल बंदौं हरिराइ।

जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै, अंधे को सबकुछ दरसाइ।।

उत्तर : शांत रस

(ख) निसदिन बरसत नयन हमारे

सदा रहति पावस ऋतु हम पै, जब ते स्याम सिधारे।

उत्तर : वियोग श्रृंगार रस

(ग) 'उत्साह' किस रस का स्थायी भाव है?

उत्तर : वीर रस

(घ) 'भयानक रस' का स्थायी भाव क्या है?

उत्तर : भय

खंड - ग

[पाठ्य पुस्तक एवं पूरक पुस्तक]

प्र. 6. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।(3×2=6)

अकसर कहते हैं - 'क्या करें मियाँ, ई काशी छोड़कर कहाँ जाएँ, गंगा मइया यहाँ, बाबा विश्वनाथ यहाँ, बालाजी का मंदिर यहाँ, यहाँ हमारे खानदान की कई पुश्तों ने शहनाई बजाई है, हमारे नाना तो वहीं बालाजी मंदिर में बड़े प्रतिष्ठित शहनाईवाज रह चुके हैं। अब हम क्या करें, मरते दम तक न शहनाई छूटेगी न काशी। जिस जमीन ने हमें तालीम दी, जहाँ से अदब

पाई, वो कहाँ मिलेगी? शहनाई और काशी से बढ़कर कोई जन्नत नहीं इस धरती पर हमारे लिए।'

1. प्रस्तुत पाठ का नाम बताइए।

   उत्तर : प्रस्तुत पाठ का नाम 'नौबतखाने में इबादत' है।

2. 'क्या करें मियाँ' - प्रस्तुत संवाद का वक्ता कौन है? वे 'गंगा' को किस नाम से संबोधित करते हैं?

   उत्तर : प्रस्तुत संवाद के वक्ता बिस्मिल्ला खाँ है, वे 'गंगा' को मइया नाम से संबोधित करते हैं।

3. बिस्मिल्ला खाँ जन्नत किसे कहते हैं? वे मरते दम तक क्या नहीं छोड़ पाएँगे?

   उत्तर : बिस्मिल्ला खाँ जन्नत काशी को कहते हैं। वे मरते दम तक शहनाई एवं काशी को नहीं छोड़ पाएँगे।

प्र.7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 30-40 शब्दों में लिखिए। (2x4=8)

(क) बिना विचार, घटना और पात्रों के भी क्या कहानी लिखी जा सकती है। यशपाल के इस विचार से आप कहाँ तक सहमत हैं?

उत्तर : हम लेखक यशपाल के विचारों से पूरी तरह सहमत हैं। किसी भी कहानी की रचना उसके आवश्यक तत्वों-कथावस्तु, घटना, पात्र आदि के बिना संभव नहीं होती। घटना तथा कथावस्तु कहानी को आगे बढ़ाते हैं, पात्रों द्वारा संवाद कहे जाते हैं। कहानी में

कोई न कोई विचार, बात या उद्देश्य भी अवश्य होना चाहिए। ये कहानी के लिए आवश्यक तत्व हैं।

(ख) मनुष्य के जीवन में पड़ोस-कल्चर का अपना ही अलग महत्त्व होता है परंतु महानगर में रहने वाले लोग प्रायः पड़ोस-कल्चर से वंचित रह जाते हैं इस बारे में अपने विचार लिखिए।

उत्तर : पास-पड़ोस मनुष्य की वास्तविक शक्ति होती है। आज घर के स्त्री-पुरुष दोनों ही कामकाज के सिलसिले में ज्यादा से ज्यादा समय घर से बाहर ही रहते हैं इसलिए लोगों के पास समय का अभाव होता जा रहा है। मनुष्य के सम्बन्धों का क्षेत्र सीमित होता जा रहा है, मनुष्य आत्मकेन्द्रित होता जा रहा है। यही कारण है कि आज के समाज में 'पड़ोस-कल्चर' लगभग लुप्त होता जा रहा है। मनुष्य के पास इतना समय नहीं है कि वो अपने पड़ोसियों से मिलकर बात-चीत करें, उनके सुख-दुःख कों बाँटें,या तीज त्योहार साथ ही मना सकें।

(ग) पाठ में आए उन प्रसंगों का उल्लेख कीजिए जिनसे फ़ादर बुल्के का हिंदी प्रेम प्रकट होता है?

उत्तर : फ़ादर बुल्के के हिन्दी-प्रेम का सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि उन्होंने सबसे प्रमाणिक अंग्रेजी−हिन्दी कोश तैयार किया। भारत आकर उन्होंने कलकत्ता से हिंदी में बी.ए. तथा इलाहाबाद से एम.ए. किया। उन्होंने "रामकथा: उत्पत्ति और विकास।" पर शोध कर पी.एच.डी की उपाधि प्राप्त की। ब्लूबर्ड का अनुवाद 'नील पंछी' के नाम से तथा बाइबिल का हिंदी अनुवाद किया। सेंट जेवियर्स कॉलेज राँची में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष बने। वे 'परिमल'

नामक संस्था के साथ भी जुड़े रहे हिंदी को राष्ट्रभाषा के रुप में प्रतिष्ठित करने के लिए उन्होंने अनेक प्रयास किए तथा लोगों को हिंदी भाषा के महत्त्व को समझाने के लिए विभिन्न तर्क दिए।

(घ) मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा क्या उम्मीद जगाता है?

उत्तर : मूर्ति पर लगे सरकंडे का चश्मा इस बात का प्रतीक है कि आज भी देश की आने वाली पीढ़ी के मन में देशभक्तों के लिए सम्मान की भावना है। भले ही उनके पास साधन न हो परन्तु फिर भी सच्चे हृदय से बना वह सरकंडे का चश्मा भी भावनात्मक दृष्टि से मूल्यवान है। अतः उम्मीद है कि बच्चे गरीबी और साधनों के बिना भी देश के लिए कार्य करते रहेंगे।

(ङ) भगत ने अपने बेटे की मृत्यु पर अपनी भावनाएँ किस तरह व्यक्त कीं?

उत्तर : बेटे की मृत्यु पर भगत ने पुत्र के शरीर को एक चटाई पर लिटा दिया, उसे सफेद चादर से ढक दिया तथा वे कबीर के भक्ति गीत गाकर अपनी भावनाएँ व्यक्त करने लगे। उनके अनुसार आत्मा परमात्मा के पास चली गई, विरहनि अपने प्रेमी से जा मिली। उन दोनों के मिलन से बड़ा आनंद और कुछ नहीं हो सकता। इस प्रकार भगत ने शरीर की नश्वरता और आत्मा की अमरता का भाव व्यक्त किया।

प्र.8. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (2 × 3 = 6)

माँ ने कहा पानी में झाँककर
अपने पर मत रिझना
आग रोटियाँ सेंकने के लिए है
जलने के लिए नहीं

वस्त्र और आभूषण शाब्दिक भ्रमों की तरह
बंधन हैं स्त्री जीवन के

(क) माँ ने बेटी को चेहरे पर रीझने के लिए मना क्यों किया है?

उत्तर : जीवन में सुंदरता ही सब-कुछ नहीं होती। वैसे भी जीवन की वास्तविक सच्चाई बड़ी कटु होती है और माँ नहीं चाहती कि उसकी बेटी इस सुंदरता के मोहजाल में फंसें और अन्याय को बर्दाश्त कर लें।

(ख) आग रोटियाँ सेंकने के लिए है जलने के लिए नहीं - पंक्ति का आशय स्पष्ट करें।

उत्तर : रोटियाँ सेंकने के लिए है जलने के लिए नहीं पंक्ति का आशय अत्याचार को न सहने से हैं। यहाँ पर माँ अपनी बेटी को समाज में व्याप्त दहेज-प्रथा जैसी कुरीतियों से अपनी बेटी को सचेत और सावधान करना चाहती है।

(ग) उपर्युक्त पंक्तियों द्वारा कवि ने क्या संदेश दिया है?

उत्तर : उपर्युक्त पंक्तियों द्वारा कवि ने शारीरिक सौंदर्य के बजाय आंतरिक गुणों के महत्त्व का संदेश दिया है।

प्र.9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार के उत्तर लगभग 30-40 शब्दों में लिखिए। (2x4=8)

(क) उद्धव के व्यवहार की तुलना किस-किस से की गई है?

उत्तर : गोपियों ने उद्धव के व्यवहार की तुलना निम्नलिखित उदाहरणों से की हैं

1) गोपियों ने उद्धव के व्यवहार की तुलना कमल के पत्ते से की हैं जो नदी के जल में रहते हुए भी जल की ऊपरी सतह पर ही

रहता है। अर्थात् जल में रहते हुए भी जल का प्रभाव उस पर नहीं पड़ता। उसी प्रकार श्रीकृष्ण का सानिध्य पाकर भी उनका प्रभाव उद्धव पर नहीं पड़ा।

2) उद्धव जल के मध्य रखे तेल के गागर (मटके) की भाँति हैं, जिस पर जल की एक बूँद भी टिक नहीं पाती। इसलिए उद्धव श्रीकृष्ण के समीप रहते हुए भी उनके रूप के आकर्षण तथा प्रेम-बंधन से सर्वथा मुक्त हैं।

3) उद्धव ने गोपियों को जो योग का उपदेश दिया था, उसके बारे में उनका यह कहना है कि यह योग सुनते ही कड़वी ककड़ी के सामान प्रतीत होता है। इसे निगला नहीं जा सकता। यह अत्यंत अरूचिकर है।

(ख) 'छाया मत छूना' कविता में व्यक्त दुख के कारणों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : 'छाया मत छूना' कविता में कवि ने मानव की कामनाओं-लालसाओं के पीछे भागने की प्रवृत्ति को दुखदायी माना है क्योंकिं इसमें अतृप्ति के सिवाय कुछ नहीं मिलता। हम विगत स्मृतियों के सहारे नहीं जी सकते, हमें वर्तमान में जीना है। उन्हें छूकर याद करने से मन में दुख बढ़ जाता है। दुविधाग्रस्त मन:स्थिति व समयानुकूल आचरण न करने से भी जीवन में दुख आ सकता है। व्यक्ति प्रभुता या बड़प्पन में उलझकर स्वयं को दुखी करता है।

(ग) माँ को अपनी बेटी 'अंतिम पूँजी' क्यों लग रही थी?

उत्तर : माँ और बेटी का सम्बन्ध मित्रतापूर्ण होता है। माँ बेटी के सर्वाधिक निकट रहने वाली और उसके सुख-दुख की साथिन

होती है। कन्यादान करते समय इस गहरे लगाव को वह महसूस कर रही है कि उसके जाने के बाद वह बिल्कुल खाली हो जाएगी। वह बचपन से अपनी पुत्री को सँभालकर उसका पालन-पोषण एक संचित पूँजी की तरह करती है। जब इस पूँजी अर्थात् बेटी का कन्यादान करेगी तो उसके पास कुछ नहीं बचेगा। इसलिए माँ को अपनी बेटी अंतिम पूँजी लगती है।

(घ) संगतकार जैसे व्यक्ति की जीवन में क्या उपयोगिता होती है?

उत्तर : संगतकार किसी भी सफल व्यक्ति के जीवन में नींव के पत्थर की तरह कार्य करते हैं। संगतकार वे सामान्य जन होते हैं जो बिना किसी के नजरों में आए बिना किसी व्यक्ति को सफलता की चोटी तक पहुँचाते हैं। जिस प्रकार संगीत के क्षेत्र में संगतकार मुख्य गायक के साथ मिलकर उसके सुरों में अपने सुरों को मिलाकर उसके गायन में नई जान फूँकता है और उसका सारा श्रेय मुख्य गायक को ही प्राप्त होता है। उसी प्रकार कला, सिनेमा, राजनीति, उद्योग,खेल आदि में ऐसे अनेक लोग होते हैं जो मुख्य व्यक्ति की सहायता में ही अपनी प्रसिद्धि और संतुष्टि समझते हैं।

(ङ) परशुराम के क्रोध करने पर राम और लक्ष्मण की जो प्रतिक्रियाएँ हुईं उनके आधार पर दोनों के स्वभाव की विशेषताएँ अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर : राम स्वभाव से कोमल और विनयी हैं। परशुराम जी क्रोधी स्वभाव के थे। परशुराम के क्रोध करने पर श्री राम ने धीरज से काम लिया। उन्होंने स्वयं को उनका दास कहकर परशुराम के क्रोध को शांत करने का प्रयास किया एवं उनसे अपने लिए आज्ञा करने का निवेदन किया।

लक्ष्मण राम से एकदम विपरीत हैं। लक्ष्मण क्रोधी स्वभाव के हैं। उनकी जबानछुरी से भी अधिक तेज़ हैं। लक्ष्मण परशुराम जी के साथ व्यंग्यपूर्ण वचनों का सहारा लेकर अपनी बात को उनके समक्ष प्रस्तुत करते हैं। तनिक भी इस बात की परवाह किए बिना कि परशुराम कहीं और क्रोधित न हो जाएँ। राम अगर छाया हैं। तो लक्ष्मण धूप हैं। राम विनम्र, मृदुभाषी, धैर्यवान, व बुद्धिमान व्यक्ति हैं वहीं दूसरी ओर लक्ष्मण निडर, साहसी तथा क्रोधी स्वभाव के हैं।

प्र.10. निम्नलिखित पूरक पुस्तिका के प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में लिखिए। (3 × 2 = 6)

1. 'माता का आँचल पाठ में भोलानाथ एक स्थान पर दूसरे बच्चों की कुसंगति में एक वृद्ध व्यक्ति को चिढ़ाता है इस व्यवहार अनुपयुक्त व्यवहार के लिए उसे क्या दंड भोगना पड़ता है आप इस घटना से क्या सीख लेते हैं?

   उत्तर : मूसन तिवारी गाँव का ही एक बूढा व्यक्ति था, जिसे कम दिखाई देता था। उसे बैजू ने चिढ़ाया था परंतु सभी बच्चों के साथ भोलानाथ ने भी बैजू के सुर में सुर मिलाकर मूसन को चिढ़ाना शुरू कर दिया। इस बात पर मूसन तिवारी बच्चों को मारने दौड़े पर बच्चे भाग गए। तब मूसन तिवारी ने बच्चों की शिकायत स्कूल में जाकर कर दी जिससे जैसे ही भोलानाथ घर पहुँचता है गुरूजी द्वारा भेजे गए बच्चों द्वारा पकड़ा जाता है और भोलानाथ को अपने इस व्यवहार के लिए सजा मिलती है। अंत में इस घटना की खबर भोलानाथ के पिता को भी मिल जाती है।

भोलानाथ के जीवन की इस घटना से हमें यह सीख मिलती है कि हमें अपने बड़े-बुजर्गों को कभी तंग नहीं करना चाहिए। जहाँ तक हो सके हमें उनके मान-सम्मान के साथ उनकी हर संभव मदद करनी चाहिए। साथ ही यह घटना हमें यह भी सीख देती है कि ऐसे मित्रों से दूर रहना चाहिए जो हमें गलत बातें सिखाते हैं।

2. "कितना कम लेकर ये समाज को कितना वापस लौटा देती है।" इस कथन के आधार पर आम जनता की देश की प्रगति में क्या भूमिका है?

उत्तर : पत्थरों पर बैठकर श्रमिक महिलाएँ पत्थर तोड़ती हैं। उनके हाथों में कुदाल व हथौड़े होते हैं। कइयों की पीठ पर बँधी टोकरी में उनके बच्चे भी बँधे रहते हैं और वे काम करते रहते हैं। हरे-भरे बागानों में युवतियाँ बोकु पहने चाय की पत्तियाँ तोड़ती हैं। बच्चे भी अपनी माँ के साथ काम करते हैं। इन्हीं की भाँति आम जनता भी अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के प्रयास में जीविका रूप में देश और समाज के लिए बहुत कुछ करते हैं। सड़के, पहाड़ी मार्ग, नदियों, पुल आदि बनाना। खेतों में अन्न उपजाना, कपड़ा बुनना, खानों, कारखानों में कार्य करके अपनी सेवाओं से राष्ट्र आर्थिक सदृढ़ता प्रदान करके उसकी रीढ़ की हड्डी को मजबूत बनाते हैं।

हमारे देश की आम जनता जितना श्रम करती है, उसे उसका आधा भी प्राप्त नहीं होता परन्तु फिर भी वो असाध्य कार्य को अपना कर्तव्य समझ कर करते हैं। वो समाज का कल्याण करते हैं परन्तु बदले में उन्हें स्वयं नाममात्र का ही अंश प्राप्त होता है। देश की प्रगति का आधार यहीं आम जनता है जिसके प्रति

सकारात्मक आत्मीय भावना भी नहीं होती। यदि ये आम जनता ना हो तो देश की प्रगति का पहिया रुक जाएगा।

3. "नयी दिल्ली में सब था... सिर्फ़ नाक नहीं थी।" इस कथन के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है?

उत्तर : इस कथन के माध्यम से लेखक ब्रिटिश सरकार का भारत में सम्मान को प्रदर्शित करता है। उसने इस कथन में ब्रिटिश सरकार पर व्यंग्य कसा है। एलिजाबेथ एवम् प्रिंस फ़िलिप के आने पर चालीस करोड़ भारतीयों में से किसी की ज़िन्दा नाक काटकर जॉर्ज पंचम की लाट में लगा देने की अपमान जनक बात सोचना और करना। यदि सच में दिल्ली के पास नाक होती तो इतना बखेड़ा खड़ा न करके सीधे जॉर्ज पंचम के लाट को ही हटवा दिया होता।

खंड - घ

[लेखन]

प्र.11 . निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर 200 से 250 शब्दों में निबंध लिखिए। [10]

परीक्षा भवन का दृश्य

प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में परीक्षाओं से गुजरना पड़ता ही है। आप किसी भी प्रकार की परीक्षा क्यों न दे रहे हो भय, जिज्ञासा, तनाव आदि से आप घिरे रहते ही हो। ऐसा ही मूल-जुला वातावरण आप हर-एक परीक्षा केंद्र में देख सकते हैं।

विद्यार्थी निर्धारित समय से एक घंटा पहले ही परीक्षा भवन पहुँचने लगते हैं एक के बाद एक वाहन जैसे रिक्शा, ताँगा, कार, स्कूटी, मोटर, साइकिल

साइकिलें आदि परीक्षा भवन के सामने रुकती हैं। जो नजदीक रहते हैं वे भी पैदल ही परीक्षा भवन निर्धारित समय से पहले ही पहुँच जाते हैं। परीक्षा भवन के प्रागंण में विद्यार्थी अलग-अलग समूहों में यहाँ-वहाँ खड़े रहते हैं। वे एक-दूसरे से परीक्षा और प्रश्नपत्र के बारे में बातें करते हुए अनुमान लगाने की कोशिश करते हैं कि प्रश्नपत्र में क्या पूछा जाएगा। आपसी बातचीत में कोई एकदम गंभीर और उदास हो उठता है, क्योंकि उसने किसी संभाव्य प्रश्न को अच्छी तरह तैयार नहीं किया था। परीक्षा भवन के बाहर खड़े सभी विद्यार्थियों के चेहरे से बड़ी उत्सुकता झलकती है। कुछ के चेहरे पर भय के भाव भी देखे जा सकते हैं। सभी के मन में भावी प्रश्नपत्र की उत्कंठा रहती है। वे आपस में प्रश्नपत्र और उसी विषय के बारे में बातें करते है। जिन विद्यार्थियों की तैयारी अधिक अच्छी नहीं होती उनके मुखमंडल पर चिंता की रेखाएँ स्पष्ट देखी जा सकती हैं। परीक्षा भवन के बाहर लगे सूचना पट्ट पर सभी विद्यार्थियों का ध्यान रहता है। यहीं से पता चलता है कि किसकी सीट किस हॉल में है।

कुछ विद्यार्थियों के माता-पिता या रिश्तेदार उनका हौसला बढ़ाते भी दिखाई पड़ते हैं और प्रश्नों को हल करने के लिए सुझाव देते है। वे उन्हें परीक्षा के भय से मुक्त करने का प्रयास करते रहते हैं। उनके साथ बैठकर पुनरावर्तन करते हैं कुछ विद्यार्थी परीक्षा उपयोगी साथ लाई गई सामग्री की पुन:पुन: जाँच करते हैं कि सब-कुछ ठीक है या नहीं। कुछ विद्यार्थी तो सारी सामग्री होते हुए भी ऐसे देखते रहते हैं जैसे उनके पास कुछ भी नहीं है।

अंत में विद्यार्थी साथ लाई हुई किताबें, कॉपियों को कमरे के बाहर रखकर परीक्षा के कमरे में चले जाते हैं। कमरे में जाकर अपने नियत स्थान पर बैठकर ईश्वर का नाम स्मरण करते हुए बड़ी बेसब्री से आने वाले प्रश्नप्रत्र की प्रतीक्षा करते हैं।

नशाखोरी और देश का युवा

आज पूरी दुनिया नशे की बीमारी से आक्रांत है। हमारा देश भारत भी इससे अछूता नहीं है। नशे के बढ़ते रोग ने समाज और देश के सामने अनेक समस्याएँ खड़ी कर दी हैं। युवाओं को अपनी गिरफ्त में लेने वाली यह बुराई उस दीमक के समान है, जो एक बार लगने पर व्यक्ति को खोखला करके ही दम लेती है।

आज के इस बदलते दौर में पिछले कुछ वर्षों से नशीले पदार्थों का सेवन करने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। विशेष कर स्कूलों, कॉलेजों तथा उच्च शिक्षा संस्थानों में अध्ययनरत छात्रों में। आज तमाम छात्र हर फिक्र को धुएँ में उड़ाते हुए देखे जा सकते हैं। नशाखोरी की बीमारी नौजवानों को सही दिशा और लक्ष्य से भटका रही है। जो देश और समाज के लिए गंभीर चिंता का विषय है। बच्चे जितने शिक्षित, संस्कारी व चरित्रवान होते हैं, समाज और राष्ट्र का भी उतना ही चारित्रिक विकास होता है। भारत में किसी अन्य राष्ट्र की तुलना में ज्यादा युवा धन है।

महात्मा गाँधी ने कहा था- 'अगर मेरे हाथ में एक दिन के लिए भी सत्ता आ जाए तो मैं सबसे पहला काम यह करूँगा कि शराब की तमाम दुकानों को बिना कोई मुआवजा दिए बंद करवा दूँगा।

शराब और नशाखोरी एक गंभीर चिंता का विषय है। नशाखोरी की बीमारी नौजवानों को सही दिशा और लक्ष्य से भटका रही है। समाज के सामने देश के भावी कर्णधारों को इस दुर्व्यसन से बचाना एक बड़ी चुनौती है। सरकार को नशीले पदार्थों के निर्माण पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगाये जाने के बारे में गंभीरता से विचार करना चाहिए। इसके अलावा नशाखोरी के खिलाफ व्यापक जागरूकता अभियान चलाए जाने की भी जरूरत है। इस बुराई को रोकने और खत्म करने के ठोस उपाय के लिए सब की भागीदारी आवश्यक है।

प्र.12. निम्न विषयों में से किसी एक विषय पर पत्र लेखन करें। [5]

1. आपके मोहल्ले में बिजली-आपूर्ति नियमित रुप से नहीं हो रही है बिजली-संस्थानक के अधिकारी को शिकायती पत्र लिखिए।

सेवा में

मुख्य अधिकारी

बिजली संस्थान

दिल्ली।

दिनाँक- 5 मई, 2016

विषय : बिजली - आपूर्ति नियमित करवाने हेतु आवेदन पत्र।

महोदय

सविनय निवेदन है कि मैं सीता नगर का निवासी हूँ। मेरी कॉलोनी में चार दिनों से बिजली की आपूर्ति ठीक से नहीं हो रही है। दिनभर में केवल एक-दो घंटे ही बिजली आती है। इस कारण हम नगरवासियों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। गर्मियों के दिन होने के कारण सभी नगरवासी त्रस्त हो रहे हैं।

बिजली व्यवस्था एक आवश्यक सेवा है। आशा है कि आप इस समस्या पर गौर करेंगे और शीध्र ही आवश्यक कार्यवाही द्वारा कॉलोनी में नियमित, बिजली पूर्ति की व्यवस्था करवाओंगे।

धन्यवाद

भवदीय

प्रवीण पांडे

अथवा

2. आपके जन्म दिवस पर आपके चाचाजी द्वारा उपहार में भेजी गई पढ़ाई से संबंधित संदर्भ पुस्तकें प्राप्त करने पर उन्हें धन्यवाद देते हुए पत्र लिखिए।

नेहरू छात्रावास

दिल्ली पब्लिक स्कूल

नई दिल्ली

दिनाँक- 30 मार्च 2015

आदरणीय चाचाजी

सादर चरण स्पर्श।

पत्र देर से लिखने के लिए क्षमा चाहता हूँ। आप तो जानते ही हो कि मेरी वार्षिक परीक्षा चल रही थी। जिसके कारण मैं आपको पत्र नहीं लिख पाया। यह पत्र मैंने आपको धन्यवाद देने के लिए लिखा है। चाचाजी आपने उपहारस्वरूप जो संदर्भ पुस्तकें भेजी थी उसके लिए अनेकों धन्यवाद। उन पुस्तकों के कारण मुझे अपनी वार्षिक परीक्षा में काफी मदद मिली। आपने अपने व्यस्तम जीवनशैली में भी मेरा जन्मदिन न केवल याद रखा बल्कि उपहार स्वरुप अमूल्य भेंट भेजीं। सच में चाचाजी बहुत-बहुत धन्यवाद। चाचाजी को मेरा प्रणाम और नन्हीं स्नेह को ढेर सारा प्यार देना। पत्रोत्तर की प्रतीक्षा में।

आपका पुत्रवत

सौरभ

प्र.13. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर 25 से 30 शब्दों में विज्ञापन तैयार कीजिए। [5]

1. चॉकलेट के लिए विज्ञापन बनाइए।

छोटे-बड़े सबको भाए।

टीन-टीन चोकलेट प्यार बढ़ाए ।

2. परफ्यूम के लिए विज्ञापन बनाइए।

तराना परफ्यूम

दिन भर महकते रहने का अरमान,
अब पूरा होगा तराना परफ्यूमस के साथ।